रोमियों की पत्री 7

Hindi Bible Class - Pr.Valson Samuel

रोमियो की पत्री अध्याय 8, पद 18 पढ़िए। **क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।** इसके सत्रहवें वाक्य का अंतिम भाग पढ़ते समय **जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥** रोमियो की पत्री अध्याय आठ अठारहवाँ पद **क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।** फिर विश्वास द्वारा औचित्य के बाद। रोमियो की पत्री के पांचवें अध्याय के पहले पद में **सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।** रोमियो की पत्री के पांचवें अध्याय के दूसरे पद में **जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।** यात्रा शुरू है। जब हम उस यात्रा को शुरू करते हैं, तो हमें अपने भीतर परमेश्वर की महिमा की एक छोटी सी आशा प्राप्त करने की जरूरत है। जब कोई कहता है कि उस आशा के बिना विश्वास से धर्मी ठहराया जाता है यदि हमारे भीतर ऐसी शाश्वत आशा, गौरवमयी आशा नहीं है, तो इस जीवन की आशा संसार होगी। दुनिया में एक महिमा है और दुनिया में एक महिमा है और हम इसके साथ हमारे सामने रहेंगे। परमेश्वर की कलीसिया में ऐसे कई जीवन हैं। तो यदि वह आशा हममें नहीं बढ़ती है, तो हम उसके प्रति आज्ञाकारी जीवन नहीं जी सकेंगे। यदि हम परमेश्वर की महिमा की आशा का प्रकाशन प्राप्त नहीं करते हैं, तो उसके प्रति आज्ञाकारिता का जीवन जीना संभव नहीं है। एक तब है जब हम कुरिन्थियों के पंद्रहवें अध्याय में इसके उन्नीसवें पद को पढ़ते हैं **यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं॥** इब्रानी पत्री के दूसरे अध्याय में, हमारे प्रभु ने मृत्यु का स्वाद चखा, क्रूस का आनंद लेना उसका मुख्य कारण है इब्रानियों अध्याय दो नौ दस वाक्य पढ़ें **पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। क्योंकि जिस के लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।** हर चीज का लक्ष्य और हर चीज का कारण, जब परमेश्वर पिता कई पुत्रों को महिमा की ओर ले जाता है यह उचित था उस समय इब्रानियों अध्याय 2 वाक्य अठारह

क्योंकि जब उस ने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिन की परीक्षा होती है॥ और वह पुत्र उसने अपने कष्टों से आज्ञाकारिता सीखी और सिद्ध हो गया वह उन सभी के लिए अनन्त उद्धार का कारण बन गया जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं पहला, पतरस के पहले अध्याय के ग्यारहवें पद में **उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उन में था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उन के बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।** उनमें मसीह की आत्मा मसीह के पास आने वाली पीड़ा और उसके बाद आने वाली महिमा दुख और महिमा ,एक पहला पतरस चौथा अध्याय बारह तेरह वाक्य **हे प्रियों, जो दुख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इस से यह समझ कर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिस से उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।** हम वहां भी उस सिद्धांत को देखते हैं। **पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिस से उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो।** वहाँ चौदहवाँ श्लोक पढ़ते समय **फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है।** इब्रानियों की पत्री दूसरे अध्याय में हमारे प्रभु ने मृत्यु का स्वाद चखा, और क्रूस ने चखा। इसका मुख्य कारण इब्रानियों की पत्री के दूसरे अध्याय के नौवें और दसवें वाक्य को पढ़ना है परमेश्वर के वचन में पवित्र आत्मा के कई नाम हैं। जब हम वहाँ रोमियो की पत्री के पहले अध्याय में पढ़ते हैं हम इसे पवित्रता की भावना के रूप में देखते हैं।वह आत्मा जो हमें पवित्रता की ओर ले जाती है। यहाँ महिमा की आत्मा है। हमें इसे अनुभव के माध्यम से प्राप्त करना होगा। पहला यूहन्ना का पत्री तीसरा अध्याय पहला पद से तीसरा पद तक **देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना। हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।**तब आशा।जब हम अपनी आशा के विषय के बारे में सोचते हैं हमारी आशा परमेश्वर के वचन पर आधारित होनी चाहिए। तब यदि हम परमेश्वर का वचन ग्रहण न करें, तो इस जीवन में (आयु में) आशा बनी रहेगी, दुनिया की आशा यह होगी कि हम एक जीवित आशा तक नहीं आ सकते। तब यह आशा वचन के द्वारा आती है। अब आपने इन सभी अंशों को पढ़ लिया है तो आपको वापस जाकर और फिर से ध्यान

करना चाहिए। और फिर इसकी वास्तविकता पर आएं। यह सोचना कितना सुंदर है कि दुनिया में हमारे सामने एक आशा है अब सोचिए एक विषय है। लेकिन इसमें अगले छह महीने लगेंगे। हर दिन हम उस तक पहुंचने की उम्मीद में जीते हैं। अब, अगर हम एक सुंदर घर बनाते हैं, तो क्या काम मानक के अनुरूप होगा? हर दिन हम उस घर को उस उम्मीद के साथ अपने सामने देखते हैं हम मन में इस विचार से गुजरते हैं कि आंख से देखना कैसा होगा। आप उसे कैसे करते हैं? अंदर का उपकरण कैसा दिखेगा? मैं दुनिया के हिसाब से एक मिसाल दे रहा हूं। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूं। उनका पूरा समय और जीवन इसी पर केंद्रित रहेगा। वे जो कुछ भी खाते-पीते हैं और दिन-रात सोते हैं, वह सब उसके सामने है। क्योंकि इसने हमें इसे स्पष्ट रूप से समझने की बुद्धि दी है। हमें दुनिया की समझ है। लेकिन हमें अपनी आध्यात्मिक बुद्धि खोलनीचाहिए। हमें अपने दिलों और आंखों को रोशन करना शुरू करना चाहिए और शानदार आशा को देखना चाहिए। तो तभी वह दृष्टि काम आती है। हमें अपने आप को शुद्ध करना चाहिए क्योंकि वह शुद्ध है। यही है अधिकार अर्थात्, पहला पतरस पहला अध्याय चार और पाँच **अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है, जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आने वाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती है।** फिर इसे देखने के लिए हमें अपनी आंखें थोड़ी खोलनी पड़ती हैं। यहीं पर हमें उस वास्तविकता तक पहुंचना चाहिए जिसमें महिमा की आशा मसीह हम में वास करता है। वही वह जगह है जहाँ मसीह, महिमा की आशा, हम में वास करता है। बहुत से लोग केवल मसीह, रोटी देने वाले और इस दुनिया के चंगा करने वाले को जानते हैं। यह बहुत ही निम्न स्तर की, शारीरिक स्थिति है। वे जो देखते हैं वह एक देहधारी यीशु मसीह है। परन्तु अगला स्तर जो हमें देखना चाहिए वह है क्रूस पर चढ़ाया हुआ मसीह। गलातियों अध्याय 5 चौबीसवें पद में यही कहता है हमें अपने मांस को उसकी वासनाओं से सूली पर चढ़ाने का आग्रह मिलता है, हमें यही मिलता है। यूहन्ना अध्याय 20 पद बाईस में जी उठे प्रभु यीशु **यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो।** तब मैं तुम्हें भेजता हूं, जैसा पिता ने मुझे भेजा है। फिर जब इसकी वास्तविकता की बात आती है तो हमें भी उस जीवन में प्रवेश करने की इच्छा होती है। वैसे ही, यीशु, जिसने महिमा में प्रवेश किया, हमारा महायाजक है, तभी हम उस महायाजक को थोड़ा सा देखना शुरू करते हैं - हमें उसके लिए सुसमाचार प्राप्त करने की आवश्यकता है अर्थात्, गौरवशाली सुसमाचार। 2 कुरिन्थियों अध्याय 4 वाक्य 4 **और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।** अगर हम हमेशा दुनिया देखते हैं, दुनिया सोचती है, अगर दुनिया खाती है, तो हम इस महिमा के राज्य को कभी नहीं देख

पाएंगे। यदि यह नहीं देखा जा सकता है, तो इसके अनुसार जीवन संभव नहीं है। हम जानते हैं कि हम कुछ क्यों हिलाते हैं मुझे यह आशा प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसलिए प्रेरित आगे दौड़ता है। फिलिप्पियों अध्याय 3 वाक्य चौदह में **निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।** फिर हमें आगे देखना होगा। प्रेरित का लक्ष्य पक्ष को देखना नहीं है या वहां क्या हो रहा है या यहां क्या हो रहा है। वह वचन के द्वारा अपने सामने उद्देश्य को देखता है। उसका बुलावा क्या है? उसकी पसंद क्या है? यह आपको कहाँ ले जाता है? तथ्य यह है कि वह स्वयं पवित्र परमेस्वर की महिमा के लिए कई पुत्रों की यात्रा पर जाता है, जहां सब कुछ बकवास के रूप में गिना जाता है। प्रेरित ऐसी दुनिया के लिए नहीं जीते थे। वे किसी ऐसी चीज के लिए दौड़ते हैं जो शाश्वत है। अगर हमें दौड़ना है तो हमें अंत तक दौड़ना होगा। पहले, प्रेरित हमें कुरिन्थियों के नौवें अध्याय में बताता है। 1 कुरिन्थियों नौवां अध्याय सत्ताईसवां पद **परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं॥** फिर वह कहता है कि मेरे शरीर पर अत्याचार करो और गुलाम बनाओ क्योंकि वह लक्ष्य उसके सामने है। यदि शरीर उसके विरुद्ध उठता है, तो उसे पीटा जाता है और दबाया जाता है, क्योंकि इतनी ऊंची पुकार देखता है। जब हम रोमियों अध्याय 8 में आत्मा की आज्ञाकारिता में चलते हैं, तो आत्मा हमें उस महिमा को प्रकट करता है जो हम में प्रकट होती है।तब हमारा कष्ट कम हो जाएगा दो कुरिन्थियों अध्याय चौदह छंद अठारह और अठारह। **क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।** फिर यहां देखें **और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं,** दूसरा कुरिन्थियों तीसरा अध्याय इसका 18 वाक्य **परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥** वह देख रहा है , है ना ? इब्रानियों अध्याय 12 दूसरे पद में **और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें;** इब्रानियों अध्याय तीन पहले वाक्य में हम देखते हैं **सो हे पवित्र भाइयों तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो।** उस जीवन का एक ही उद्देश्य है वजन संगीता सताइस चौथे वाक्य में कहते हैं **एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में**

ध्यान किया करुं॥ इसे टनल विजन या single विजन के नाम से भी जाना जाता है। यानी एक ही दृष्टि के सामने दौड़ना। यह बहुत स्पष्ट है। यहीं पर हमने सभी अलग-अलग चीजों को एक में काट दिया, हमारी परम बुलाहट की महिमा, वह गौरवशाली आशा, आत्म-पूर्ति के जीवन में ही हमें धीरे-धीरे इस स्तर पर लाया जाता है।रोमियों अध्याय आठ के अठारहवें पद को पढ़ते समय **क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।** वह है। मैं अक्सर पढ़ता हूं कि जब मैं सृष्टि कहता हूं, तो ईश्वर की कई रचनाएं होती हैं स्वर्गदूत हैं,ऐसे बुजुर्ग हैं जो स्वर्गीय हैं। हम नहीं जानते कि स्वर्ग में किस तरह के जीव हैं। देवदूत कई प्रकार के होते हैं। करूब हैं, सेराफिम हैं, और विभिन्न मानकों के स्वर्गदूत हैं। फिर वहीं हम उन्हें देखते हैं। हम वहाँ कुछ प्राचीनों को स्वर्गीय क्षेत्र में देखते हैं। फिर रचनाएँ कई आकारों की होती हैं। वे जीव स्वयं परमेश्वर के पुत्र के रहस्योद्घाटन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। 1 पतरस अध्याय 1 पद दस से बारह तक **इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत ढूंढ़-ढांढ़ और जांच-पड़ताल की, जिन्हों ने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उन में था, और पहिले ही से मसीह के दुखों की और उन के बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। उन पर यह प्रगट किया गया, कि वे अपनी नहीं वरन तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिन का समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्हों ने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया: तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं॥** तब हमारा रहस्योद्घाटन, परमेश्वर के पुत्र का रहस्योद्घाटन एक बड़ी त्रासदी है अगर हम इसे जाने बिना जीते हैं जबकि एक बड़ा समूह इसकी तलाश करता है। अगर हम इस दुनिया की चीजों को जानेंगे और इसके लिए अपना सारा समय बर्बाद करेंगे, तो हमारे पास नाम के लिए प्रार्थना होगी और वह भी यहां का जीवन की चीजें होंगी। जब ऐसा होता है, तो यह बहुत दुख की बात है कि हम उस दृष्टि, अपनी बुलाहट, अपनी पसंद, अपनी यात्रा, जो कि हमारा मूल है, को साकार किए बिना जीते हैं। हम अपनी Calling and Selection नहीं जानते हैं। रोमियो की पत्री अध्याय आठ, पद बीस **क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई।** एक मायने में हम भी परमेश्वर की रचना हैं। तब हमें क्षय की भावना होनी चाहिए।यही गुलामी है, । यह सच नहीं है, यह पाप से पैदा हुआ शरीर है। हमारे शरीर को महिमा से ढंकना चाहिए। दूसरा कुरिन्थियों अध्याय 5 पहले पद में **क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु**

चिरस्थाई है। हम जानते हैं कि हम स्वर्ग में हैं। फिर इसे पहनना स्वर्गीय है। तब यह तब होता है जब हम परमेश्वर के सामने बार-बार ध्यान करते हैं कि परमेश्वर की आत्मा का महान रहस्योद्घाटन हमारे भीतर प्रकट होता है। रोमियों के आठवें अध्याय के बाईस और तेईस पद पढ़ें। **क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।** तब हमारी Recovery कई स्तरों पर होती है। एक है पाप से मुक्ति। क्षमा, पापों की क्षमा, फसह छुटकारे की शुरुआत है। लेकिन जैसे-जैसे हम आत्मिक रूप से विकसित होना शुरू करते हैं, हम आज सुनते हैं कि जब हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं, पाप में मरने के लिए, हमें थोड़ी मुक्ति मिलती है। पाप के लिए मरो। हमारे जीवन के सफर में पाप का रिश्ता एक के बाद एक चलता रहता है। जैसे, हमारा उत्थान का जीवन अगले छुटकारे का क्षेत्र है। जब हम उस महान जीवन को जीना शुरू करते हैं, तभी हम उन कई ताकतों से मुक्त होते हैं जो हमारा विरोध करती हैं। बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले एक समूह के साथ प्रेरितों के काम अध्याय 2, पद 40 . में प्रेरित क्या कहता है? **उस ने बहुत ओर बातों में भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ।** यह एक मोचन है। तब यह दुनिया हमें कवर नहीं करती है। हम अचानक दुनिया नहीं छोड़ते। फिर ऐसी सभी स्थितियां हर कदम पर हैं। जैसा कि अब हम सोचते हैं, हम उन सभी अधिकारों को समझ सकते हैं जो हम जीवन के माध्यम से प्राप्त करते हैं, परमेश्वर की आत्मा के नेतृत्व में। हमारे दिल की आंखें चमक उठती हैं। ये सभी विकास के क्षेत्र हैं।यह एक ऐसा जीवन है जिसमें हम कई चीजों से मुक्त होते हैं। लेकिन हमारा अंतिम मोचन हमारे शरीर का मोचन है। हमारा अंतिम छुटकारे इस सांसारिक शरीर की महिमा है। तब उसके लिए हमें आत्मा का पहला उपहार मिला है, उस आत्मा को देखते हुए। हमारा शरीर अपनी पूर्व अवस्था में है, अर्थात इन सब से ऊपर मसीह की समानताएँ हैं। कि मसीह का महिमामय शरीर हम में हो सकता है अर्थात्, हम यहोवा के उस वरदान को जानते हैं, दूसरा कुरिन्थियों अध्याय तीन पद अठारह **परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥** पवित्र आत्मा का पहला उपहार। इफिसियों की पत्री में हम देखते हैं कि यह पवित्र आत्मा से मुद्रा किया गया है मुहरबंद है। यह संपूर्ण नहीं है। हमें अभी तक हमारा असली शरीर नहीं मिला है। अगर हमको ऐक जमीन खरीदना चाहते तो पैसा देने के बाद भी वह अछा जमीन मिलने के लिऐ दो तीन मैना wait करना चाहिऐ तब मिलेगा जो ऐसी आशा करते हैं वे जानते हैं कुछ के लिए विदेश जाना एक बड़ी आशा है। समय वहाँ नहीं जाता और अभी भी दो महीने

हैं।अब America में वीजा लेने वाले से पूछना है वे दस साल शायद इंतजार कर रहे होंगे । लेकिन वे उम्मीद के साथ इंतजार कर रहे हैं। इसके लिए प्रार्थना करते हैं, इसके लिए उपवास करते हैं। मैंने किसी एक व्यक्ति से पूछा, "क्या आपने लंबा उपवास किया है?" उन्होंने कहा कि हाँ । मैंने फिर पूछा, कितने दिन? एक सप्ताह। मुझे उन पर बहुत Rrespect हुआ है ना? मैंने पूछा, "तुमने उपवास क्यों किया?" मैंने अमेरिका जाने के लिए वीजा के लिए आवेदन किया और मैंने इसे जल्द से जल्द प्राप्त करने के लिए उपवास किया। सब कुछ चला गया, तब यह एक आशा है। किसी तरह उस अमेरिकी धरती पर पैर रखना । तो मैं पूछता हूँ, तो हमारी शाश्वत आशा क्या है? हमारे शरीर की मुक्ति कब है ? हम अपना सुंदरता देख रहे हैं। सुंदरता अब चली जाएगी, छोटी उम्र में तुम कितनी सुंदरता देखोगे और चली जाएगी। समय आगे बढ़कर हमारा सुंदरता चला जाता है और बीमारियां होने लगती हैं। लेकिन एक शाश्वत, महिमामय शरीर, एक शरीर जो अनंत काल तक शासन करता है, उसने हमें इसे बनाए रखने के लिए यह आत्मा दी है। आइए पढ़ते हैं वह वाक्य जिसमें दाग, झुर्रियां कुछ भी नहीं है। उस वाक्य को बार-बार पढ़ने का मन करता है। पहला पतरस का पहला अध्याय और तीसरा पद पढ़ें। **हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह के हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।** यीशु का मरे हुओं में से जी उठना उसकी दया के अनुसार हमारे लिए जीवन की आशा है - जब हम उस आशा को कहते हैं तो हमारे पास पुनरुत्थान होता है। इस समय हम किसी भी समय इस दुनिया को छोड़ सकते हैं और खुद को दफना सकते हैं लेकिन हम प्रभु के आने पर जी उठेंगे। यह आशा होनी चाहिए, क्या कभी किसी ने ऐसी आशा की है? वह जो हमारे स्वर्ग में रहने वाली आत्मा के साथ फिट बैठता है। आत्मा के साथ मिलकर उस आकाशीय पिंड की कल्पना करना बहुत कठिन है। ऐसा करना हमारे लिए मुश्किल है। एक वह है जो पतरस चौथे पद के चौथे अध्याय में कहता है **अंत के दिनों में प्रकट होने के लिए तैयार उद्धार** यही महिमा है, यही हमारे उद्धार का अंतिम चरण है। तब हमें यह कहते हुए यहीं नहीं रुकना चाहिए कि हम बच गए हैं।हम उस शुरुआत में मोक्ष का पहला कदम उठाते हैं। और फिर इस यात्रा में हमें कई विषयों पर बचाया जा रहा है। फिर उस यात्रा पर **अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।** ताकि विश्वास सिर्फ विश्वास नहीं है विश्वासियों में काम पर परमेश्वर की शक्ति। वचन में विश्वास एक शक्तिशाली क्षेत्र है। यह सब हमें विश्वास के साथ ग्रहण करना चाहिए। हम वचन से विश्वास प्राप्त करते हैं और इसे विश्वास से प्राप्त करना चाहिए। मैं अक्सर खुद को देखता हूं और फिर परमेश्वर से पूछता हूं मेरे प्रिय प्रभु, मैं इसके माप तक नहीं पहुँचता। क्योंकि यह हमें पूर्णता की ओर ले जाना चाहिए। शुरुआत में और पूर्णता के लिए पाप से छुटकारे के लिए विश्वास एक महत्वपूर्ण

उपकरण है, परमेश्वर में विश्वास। यह परमेश्वर के वचन से आता है। जब हम प्रत्येक दिन वचन पर मनन करते हैं, तो वचन हमारे भीतर एक विश्वास बन जाना चाहिए। 1 पतरस अध्याय 4 पद 4 **अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।** यह केवल विश्वास नहीं है जो हमारे भीतर कार्य करता है, यह हमारे बाहर के मनुष्य पर कार्य करता है। **जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है, जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आने वाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती है।** तो यही हमारे नए जन्म का उद्देश्य है।यही यीशु के पुनरुत्थान का उद्देश्य है। आज महिमा में महायाजक के रूप में पिता के दाहिने हाथ पर बैठे यीशु का यही उद्देश्य है। हमें पूरी तरह से बचाने के लिए पूर्णता क्या है? एक ऐसा अधिकार जो क्षय और अपशिष्ट से मुक्त हो। तब हमें इसे रखना चाहिए। जब हम बीज का तरह हैं,जब उस शरीर को दफनाया जाता है यह एक बीज है जो अपनी पूरी क्षमता से फीर जी उठता हैा ,इसकेलिए हमें अपने शरीर और शरीर का ऐक ऐक अंग की देखभाल करने की जरूरत है ताकि हम उस पूर्ण महिमा को प्राप्त कर सकें। हमारे कर्म, हमारी दृष्टि, हमारी वाणी, हमारा श्रवण, हमारा आचरण, हमारा जीवन-पद्धति, विश्वास द्वारा परमेश्वर की शक्ति द्वारा सुरक्षित जीवन बन जाना चाहिए। यहीं पर वचन से आने वाला विश्वास हमारे भीतर इन आध्यात्मिक सत्यों को लगातार प्रकट कर सकेगा । इसे हममें परमेशवर की शक्ति के रूप में कार्य करना चाहिए ताकि पहले से छिपे रहस्यों को प्रकट किया जा सके। हमारी आँखों में क्षीण न होने दे । इस विश्वास द्वारा बनाई गई परमेशवर की शक्ति से इस माध्यम से जाना चाहिए जो कुछ हमें स्वर्गीय देखने से रोकता है वह दूर हो जाए। तो यह आध्यात्मिक लक्ष्य, जो आशा हमारे पास आती है, उसे देखना है,तुम केवल उस महिमा का स्वाद experience के लिये सिर्फ उसमें प्रवेश नहीं करते, परन्तु उस विश्वास के द्वारा जो परमेश्वर के वचन से प्रतिदिन आता है।अपने आप को परमेश्वर की शक्ति में रखते हुए, जैसा कि प्रेरित कहते हैं, जैसा कि आप हमें बताते हैं **(तो मानो वह शुद्ध थे)** जिसके पास यह आशा है क्या आशा है? जो लोग यीशु के समान बनने की आशा रखते हैं, ।आइए हम उस पद पर लौटते हैं जिसे हम पढ़ते हैं रोमियो की पत्री आठवें अध्याय के तेईसवें पद का दूसरा भाग **और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।** कितने लोगों के पास यह आह है? दुनिया में सब कुछ हमारे लिए सुंदर होने जा रहा है और हम एक आह नहीं देखते हैं, है ना? हम कहते हैं, हे प्रभु, सौ वर्ष की आयु तक जीने में मेरी सहायता कर। मुझे पता है कि रबर की अब कोई कीमत नहीं है।लेकिन कीमत के समय पर एक विश्वासी के लिए प्रार्थना करें जिसने इसे पहन लिया है भगवान, वह इनमें से एक का अनुभव करने और एक अच्छा जीवन जीने के बाद ही स्वर्ग में

आएगा। क्या होगा यदि उस समय के परमेश्वर के बच्चों के पास आज कम से कम एक आशा थी? कोई उम्मीद नहीं थी, अंदर एक डर था। अब जब कि तुम पहले ही अपना मन इन सब में लगा चुके हो, तो क्या हुआ यदि प्रभु अपने आने पर नहीं जाता! आज का समय ऐसे नहीं है, आज ही जीवन में मनुष्य के लिए एकमात्र आशा है। वह आदमी दस नए सिक्के लेने के लिए दौड़ रहा है। अनंत काल का कोई बोध नहीं है। धोखा न खाओ ताकि हम दुनिया के लिए न बुलाए गये । हमें अनंत काल के लिए बुलाया गया है, है ना? हमें दुनिया में दस नए पैसे कमाने के लिए नहीं बुलाया गया है। स्वर्गीय हमें एक अधिकार के लिए अलग बुला रहा है, क्षय से मुक्त है। इसे देखने, समझने, समझने के लिए इन दिनों हमारे दिल की आंखें चमकें। इसे पाने के लिए अंदर एक आह, हमारे भीतर एक प्यास, एक इच्छा होने दो। रोमियों अध्याय आठ, पद चौबीस **आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है** इस आशा के बिना, क्या यह वास्तविक मोक्ष है? **आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है** एक है थिस्सलुनीकियों पांचवां अध्याय आठ से पढ़ें **पर हम तो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिन कर सावधान रहें।** आइए पढ़ते हैं निम्नलिखित वाक्य **क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। वह हमारे लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों: सब मिलकर उसी के साथ जीएं।** बचाए जाने का मतलब बचाया जाने केलिए नहीं है। यह रक्षा । वह गौरवशाली आशा जो हमारे सामने है। महिमा हमारे सामने रखा हुआ है। शरीर का मोचन। यह हासिल किया जाना चाहिए। आपको इसके साथ अपने सामने रहना होगा। इसलिए हमारा नया जन्म हुआ है। क्या बपतिस्मा के बाद पूर्ण विराम लगाकर मोक्ष प्राप्त करना संभव है? उन्हें पूछना चाहिए। कई लोग उस हिस्से पर पूर्ण विराम लगा देंगे। हमें इसे हर दिन हासिल करने का प्रयास करना चाहिए, हमें दौड़ना है। 1 कुरिन्थियों के नौवें अध्याय से तेईस पद पढ़ें। **और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं।** क्या जीवन जैसी कोई चीज है? हम जानते हैं कि हम खाने से पहले एक बात प्रार्थना करेंगे। परमेशवरका शक्ति से उसका कार्य करने में मेरी सहायता करनी चाहिए। मैं नहीं जानता कि कितने लोग इसे ध्यान में रखकर प्रार्थना करते हैं। क्या हम इसे विश्वास से ले सकते हैं और हर बार जब कोई इसकी प्रार्थना करता है तो प्रार्थना कर सकते हैं? या यह एक समारोह है? ऐसा जो कुछ भी किया जाता है वह सुसमाचार के लिए होता है। क्या जीवन जैसी कोई चीज है? भक्तों का ऐसा जीवन होता है। 1 कुरिन्थियों नौवां अध्याय चौबीसवां पद। **क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो।** अनंत काल को प्राप्त करने के लिए, महिमामंडित होना, क्षय, अपशिष्ट के बिना एक अधिकार प्राप्त किया जाना चाहिए। हमें बंधे नहीं रहना

चाहिए। इसे पाने के लिए दौड़ें। 1 कुरिन्थियों नौवां अध्याय पच्चीसवाँ पद। **और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुरझाने का नहीं।** ओलिंपिक में जाने वाले सब कुछ पीछे छोड़ जाते हैं। सुबह चार बजे उठकर डाइट देखें। उसका संसार से कोई संबंध नहीं है। सुबह दस मैल दौड़ता है। कई सालों तक उनका जीवन अलग था। इसके लिए वे उन्नीस साल तक तैयारी कर रहे हैं। यह एक छोटा स्वर्ण पदक खरीदने के लिए किया जाता है। यह एक विशेष जीवन है। बहुतों ने मुझे अपने जीवन के बारे में बताया है। वे बहुत कम उम्र में इसके लिए तैयार हो रहे हैं। इसके लिए उन्हें तैयार कर रहे हैं। वे उस स्कूल में नहीं जाते जो सब कुछ सिखा देता है। इसके लिए उन्हें विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जा रहा है।मुझे तब याद दिलाया गया था कि अगर वे इस तरह से हर चीज से परहेज करते हैं, तो हम तभी गाएंगे जब हम अपने जीवन में बहुत सी चीजों से परहेज करेंगे। अंग्रेजी में detached नाम का एक शब्द है। बहुत सी चीजों को केवल अलग किया जा सकता है। वह अलग जीवन है। लक्ष्य एक सचेत जीवन प्राप्त करना है। लेकिन वे इसमें और उसमें शामिल नहीं हैं। वे वही हैं जो खुद को रखते हैं। वे जानते हैं कि उनकी कॉलिंग और पसंद क्या हैं। वे यह भी जानते हैं कि इसे अपने जीवन में कैसे रखा जाए।इसलिए हमें अपने आप को एक पथ के लिए विनम्र करना होगा और इसे स्पष्ट रूप से देखना होगा। मैं चाहता हूं कि पवित्र व्यक्ति उस जीवन का नेतृत्व करे। वह भी परमेशवर के बच्चों का धन्य जीवन है। अदृश्य क्षेत्रों का उल्लेख है। जो अदृश्य क्षेत्रों में बैठे हैं वे अदृश्य हैं। उन्हें दुनिया भर में ज्यादा दौड़ने की जरूरत नहीं है। लेकिन उन्हें जो मिलता है वह बहुतों को स्वर्गीय । हम तो यही चाहते हैं। हम जानते हैं कि आज लोगों का एक अच्छा हिस्सा सांसारिक लाभ के लिए दौड़ रहा है। यह कैसे हो सकता? वह आशीर्वाद क्या है? हम इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं? यह सब बकवास है। हम स्वर्गीय बुलाहट के सहभागी हैं। हमें स्वर्गीय कहा जाता है। हम परमेशवर से पैदा हुए हैं। हमें यह समझना चाहिए कि आत्मा में नया मनुष्य पुराना मनुष्य को मराने केलिए और उसकी पूर्णता को प्राप्त करने के लिए स्वर्गीय बुलाहट है। ऐसे हैं इस उम्मीद के लोग। रोमियों अध्याय आठ, चौबीस में **हम उस आशा से बच गए हैं।** इस आशा के बिना मोक्ष(salvation) क्या है? हमें खुद से पूछना होगा। वहां आशा का स्तर कहां है? या हम उदासीनता की स्थिति में रहते हैं? हम प्रार्थना में क्या प्रार्थना करते हैं? वचन के द्वारा प्राप्त करने के लिए हम वचन का क्या अध्ययन करते हैं? जब आप वचन सुनने के लिए सीखने के लिए यहां आते हैं तो आपका लक्ष्य क्या होता है? यदि वह लक्ष्य परमेश्वर का वचन, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं है, तो आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। बस समय बर्बाद कर रहे हैं। (Romans.8:25) **परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की आशा रखते हैं, तो धीरज से उस की बाट**

जोहते भी हैं॥ तो हम क्या देखने की उम्मीद करते हैं? इब्रानियों अध्याय 11 प्रथम पद **अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।** इब्रानियों अध्याय 11 तीसरे पद में **विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।** यह संसार आने वाले परमेश्वर के वचन के द्वारा बनाया गया था क्योंकि यह संसार को दिखाई नहीं देता। जो दिखाई देता है वह अदृश्य से प्रकट होता है। जब परमेशवर कहते हैं कि अदृश्य क्षेत्र में प्रकाश हो, तो दृश्य क्षेत्र में प्रकाश है। जब हम कहते हैं कि हमें अदृश्य क्षेत्र से क्या मिलता है, जैसा कि कहा जाता है, जब हम इसे उँडेलते हैं, तो इस प्रकार पृथ्वी पर स्वर्गीय प्रकाशन दिया जाता है। हमें यह आशा रखनी चाहिए। हम जो देखते हैं वह नहीं है जो हम देखते हैं,धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिएa। आप रोमियों की आठवें अध्याय से छब्बीस पद पढ़ सकते हैं। **इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये बिनती करता है।** तब हमें कई सच्चाई का पता चलता है।अब इस जो मिलता है वह अदृश्य क्षेत्र के सत्य हैं। अब जबकि हमारे पास एक कार और एक घर मिलेगा, ऐसे बोलेगा तो हमें आत्मा से किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है। हम वहाँ जायेंगे और प्रभु से लड़ेंगे। हे प्रभु, मुझे कार दो, मुझे घर दो, पिताजी, मुझे इसकी आवश्यकता है, पिताजी, मुझे एक अच्छी नौकरी चाहिए, पिताजी। यह सब देखकर हमें यहाँ आत्मा की कोई आवश्यकता नहीं है। जब ईश्वर हमें यह सब देगा, तब हमें अपनी कमजोरी का एहसास होगा। हे प्रभु, मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं जानता था। मैं इस क्षेत्र के बारे में कुछ नहीं जानता। यह अदृश्य क्या है?. ये क्या उम्मीद है पापा? यह क्या मोक्ष है जो वहाँ तैयार किया गया है? परमेशवर की आत्मा के नेतृत्व में जीवन क्या है, पिताजी? मुझे नहीं पता, पिताजी। तभी हमें अपनी कमजोरी का एहसास होता है। जैसा कि हम रोमियों के आठवें अध्याय में पढ़ते हैं, कोई व्यक्ति शारीरिक से आध्यात्मिक की ओर कैसे जाता है? जीवन की आत्मा का सिद्धांत क्या है? समझ जाएगा। काउंसलर कहता है या सलाह देता है रोमियों अध्याय 8, पद 2 **क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।** बच्चों को वह आजादी मिलती है। वह स्वतंत्रता क्या है? यह कैसे लिखा है, पिताजी? प्रश्न पूरे हैं। हम नहीं जानते। कोई देह से आत्मा में कैसे आता है? रोमियों अध्याय आठ, पद नौ **परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं,** आत्मा हमें बताती है कि तुम परमेश्वर की सन्तान हो। रोमियों का आठवाँ अध्याय पद चौदह में कहता है **इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।** श्लोक

तेरह में कहते हैं **क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।** तो बहुत सारे विषय हैं। इसके लिए यही प्रार्थना कर रहे हैं। लेकिन तब हम नहीं जानते। हम एक [कमजोरी] कमजोरी महसूस करते हैं। शुरुआत में हम इसके बारे में कुछ नहीं जानते थे हमें इसमें से कुछ भी नहीं मिला है, आप हमारे पुराना मनुष्य में रह रहे हैं। पुराना मनुष्य गाना जानता है, वह ताली बजाना जानता है, वह जानता है कि सभा में कैसे आना है, वह उपवास करना जानता है, वह वचन को पढ़ना जानता है, वह जानता है कि यदि वह चाहता है तो प्रचार कैसे करना है। लेकिन हमें जो पता चलता है वह यह है कि यह सब पुराना आदमी किया जाता है। नया आदमी कैसा है? यह व्यवहार कैसे आता है? इस पथ को कैसे जिएं? जब यह सच्चाई आत्मा में हमारे सामने प्रकट होने लगेगी, तो मेरे लिए इसे प्राप्त करना संभव नहीं होगा, लेकिन केवल तभी जब आत्मा उसमें वास करे। आत्मा से प्रार्थना करना ही है। परमेश्वर की आत्मा मेरी कमजोरी का समर्थन करने के लिए है मुझे नहीं पता कि मुझे प्रार्थना कैसे करनी चाहिए। रोमियों की अध्याय आठ, पद छब्बीस **इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये बिनती करता है।** तब हमें अपनी कमजोरी का पता चलता है। जब हम उस कमजोरी में आत्मा की सहायता मांगते हैं, तो हमारा आंतरिक स्व बोलता है आप केवल आत्मा के द्वारा चलना है हम एक कुर्सी पर बैठे हैं फिर बहुत कमजोर आवाज में, अपना अनुभव बता रहा हूं परमेश्वर ,मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता, मैं केवल इसे प्राप्त कर सकता हूं यह एक धन्य जीवन है। मुझको आत्मा के द्वारा जीने में मेरी सहायता करनी चाहिए। आपको आत्मा के द्वारा प्रार्थना करने में मेरी सहायता करनी चाहिए। यह मेरे लिए आत्मा द्वारा प्रकट किया जाना चाहिए। मुझे आत्मा से दृढ़ होना चाहिए, यह विश्वास देना चाहिए, पिताजी। जब हम यह सब प्रार्थना करते हैं, तो हम अपने लिए प्रार्थना नहीं कर रहे होते हैं। जब इफिसियों की पत्री में परमेश्वर के पुत्रों को वहां पंक्तिबद्ध किया जाता है पवित्र परमेश्वर सारी सृष्टि से कहते रहे हैं कि परमेश्वर की कृपा की महिमा स्थिर है। मुझे याद है हमें मिल गया। नहीं। जब हम वहाँ जाते हैं तो हम नम्रता और नम्रता के उच्च स्तर पर होते हैं। (John13:3)। **यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास जाता हूं। भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी। तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पांव धोने और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी उसी से पोंछने लगा।** तो स्मृति कहाँ है? उसके हाथ में। **यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास जाता हूं।** यह आखिरी बार है

जब वह Servent बना है। वह बहुतों के लिए फिरौती देने जा रहा है। वह अपने मंत्रालय के अंतिम चरण में पहुंचने वाले हैं। वह उच्चतम बिंदु पर जाता है। वह झुककर सबके पैर धोता है। नम्रता का एक क्षेत्र जो मेरे लिए अच्छा प्रकट हुआ है। जो हम सामान्य रूप से देखते हैं He is beyond our understanding यह पुत्र नम्रता का स्रोत है। हम पढ़ते हैं कि वह एक बार पाप के लिए मरा और आज भी जीवित है, और वहां जाकर यह कहना पर्याप्त नहीं है, 'पिताजी, मैंने यह सब पूरा किया है।' जीना परमेश्वर के लिए है। परमेश्वर हमारा इंतजार कर रहा है। वे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं, इस बड़ी इच्छा के साथ कि सभी परमेश्वर के पुत्र बनें। यह शब्द परमेश्वर के सेवक के साथ घोषित किया गया है। क्योंकि पिता को अपने जैसे पुत्रों की आवश्यकता होती है। आप यहां रह सकते हैं और वैसे भी वहां पहुंच सकते हैं, आपको ऐसे समूह की आवश्यकता नहीं है जो कहता है कि आपको वैसे भी जाना है। वह समूह जो इसका अधिकतम लाभ उठाना चाहता है प्रभु उन्हें पूरी तरह से बचाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। फिर जब राज्य पिता को सौंप दिया जाता है, तो पुत्र , अर्थात् सभी बातों में परमेश्वर। वह नीचे उतरा और वहीं बैठ गया। तब वह स्वर्ग का सिद्धांत है। यह हमें सिखाता है कि यह परमेश्वर की आत्मा है जो हमें स्वर्ग के उस स्तर तक ले जाती है। आप रोमियों की आठवें अध्याय, छब्बीस पद के दूसरे भाग पढ़ सकते हैं **इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये बिनती करता है। और मनों का जांचने वाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।** और फिर कहते हैं रोमियों अध्याय आठ, पद अट्ठाईस **और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।** तब रोमियों की पत्री का उद्देश्य या (Destination)**क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।** हम इसे नहीं जानते पिता , यह क्या है? वहीं आत्मा हमारी मदद करती है। मैं इस रास्ते को नहीं जानता, पिताजी। आत्मा सहायता करेगा: यह वचन मुझ पर प्रगट कर। आत्मा मदद करेगी, यह आत्मा का महान कार्य है। क्यों? आत्मा क्यों मदद करती है? हम वहां जाकर यह नहीं दिखा सकते कि मैं कुछ हूं तब पुत्र यीशु के समान नम्र और दीन लोगों का एक समूह होना चाहिए। सज्जन, दास यीशु प्रभु जो इस सब के दायरे में अपने शिष्यों के पैर धोते हैं आज वह पिता के दाहिने हाथ पर बैठा है और पिता की आज्ञाकारिता में है। जब राज्य पिता को सौंप दिया जाता है तो प्रभु यीशु नम्रता से पिता की सेवा करते हैं। पुत्र परमेश्वर के पांवों के नीचे दीन है, जो उस ने उसे दिया

है, कि पिता सब कुछ में सब कुछ हो। यह दिव्य रहस्य है। जब मैं आपको यह बताता हूं तो मुझे पता चलता है कि यह सच है लेकिन फिर यह अभी भी [अभी भी] रहस्य है। क्या यह स्वर्ग है? क्या यह स्वर्ग का सिद्धांत है? इसमें कोई शक नहीं कि ऐसा ही है। हमारी कल्पना में स्वर्ग देखना आज दुनिया देखने जैसा नहीं है। यह आध्यात्मिक है। अगर आप इसे देखना चाहते हैं, तो आपको इसे थोड़ा समझना होगा। हम स्वर्ग की विशिष्टता को तभी देख सकते हैं जब हम उक्त आत्मा के विकास पर आएं। रोमियों कि पत्री अध्याय आठ, पद उनतीस **क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।** इसे समझना चाहिए।
रोमियों अध्याय आठ, पद तीस **फिर जिन्हें उस ने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है॥** औचित्य क्यों? महिमामंडन के लिए। अगर justification है तो कैसे जिएं? आत्मा द्वारा। गलातियों अध्याय 5 पद सोलह में **पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।** रोमियों के आठवें अध्याय के श्लोक 1 और 2 **सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।**
रोमियों 8: 4 **इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।** एक समूह जो शरीर का स्वभाव से आत्माका स्वभाव तक, शरीर का सोच से आत्मा का सोच तक परमेश्वर के वचन को प्रस्तुत करता है। परमेश्वर की सच्ची सन्तान एक समूह है जिसमें परमेश्वर की आत्मा निवास करती है, एक समूह जो परमेश्वर की आत्मा के नेतृत्व में है। जिस समूह ने अब्बा फादर नामक पुत्रत्व की भावना प्राप्त की है, वह निश्चित रूप से जानता है कि उनमें क्या आत्मा है। वह आत्मा जो उनमें व्याप्त है। मसीह के साथ समूह वारिस वे हैं जो उसके साथ दुख उठाने को तैयार हैं, एक ऐसा समूह जो जो कुछ भी है उसका आनंद ले सकता है। एक समूह जो हमारे पास आने वाले रहस्योद्घाटन या महिमा का बहुत कम रहस्योद्घाटन प्राप्त करता है। उस आशा में रहने वाला समूह एक ऐसा समूह है जो सोचता है कि दुनिया उस आशा के कारण बकवास है ऐसा समूह इसे प्राप्त करने जा रहा है। प्रभु यीशु के अनुयायियों का एक समूह। रोमियों की आठवें अध्याय को पढ़ते समय, पद इकतीस हमें इस बारे में क्या कहना चाहिए? हमारे महिमामंडन के संबंध में।हम इस बारे में क्या कह सकते हैं कि यह एक स्वर्गीय स्थिति है जिसमें हमारी महान बुलाहट मसीह के अनुसार है? जब हम इतना सुनते हैं तो हमें संदेह होता है, क्या यह सब सच है? इस पर कोई <u>प्रतिक्रिया</u> नहीं है।कुछ भी काम नहीं करता क्योंकि दुनिया। लेकिन हमें क्या कहना चाहिए? हम किस बारे में बात कर रहे हैं? प्रेरित

कहते हैं बच्चों, तुम्हारे विरुद्ध बहुत सी ताकतें हैं। जिन लोगों को थोड़ी सी रिहाई मिली है, वे कहेंगे कि मेरे खिलाफ कई ताकतें हैं। मेरा शरीर एक शक्ति है। इसमें कई शर्तें हैं। मैं इसे कैसे दूर कर सकता हूं? चारों ओर देखने पर यह सब मेरे लिए एक रुकावट है। मैं इस प्रार्थना करने वाला जीवन को नहीं जानता। मेरे पास वचन की कोई *रिहाईं है*, पिता मैं वचन को नहीं जानता। मैं इसे कैसे लूं? प्रेरित हमें रोमियों अध्याय आठ, पद इकतीस में बताता है **अगर परमेश्वर हमारे लिए है, तो हमारे खिलाफ कौन है?** अगर भगवान हमारे लिए है, तो नुकसान क्या है? फिर रोमियों का आठवां अध्याय बत्तीस पद कहता है **जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?** कितने लोग इसे समझते हैं? आज लगभग हर कोई यही खून कह रहा है। मेरा सारे गलतियों को माफ कर दिया गया है और अब मैं ठीक हूँ। इस बारे में कोई रहस्योद्घाटन नहीं हुआ है यदि वह रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ था। तो जब आप यह शब्द सुनते हैं, तो इस जीवन में आने की इच्छा किसकी है? इसे कौन पाना चाहता है? लेकिन दूसरी ओर एक विचार, यह कैसे हो सकता है? यह मेरे साथ संभव है। इसलिए पवित्र आत्मा हमें इसकी याद दिलाता है मेरे बच्चे, पाप से, उस गड्ढे से, आपको कीचड़ से बचाने के लिए यदि परमेश्वर का पुत्र आपको दिया गया है रोमियों अध्याय आठ, पद 32, कहता है: **जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?** सब कुछ क्या है? इस पूर्णता में आने वाला सब कुछ। इस आत्मनिर्भर जीवन के लिए सब कुछ, आत्मा के अनुसार जीने के लिए, जीवन की आत्मा की व्यवस्था को सिद्ध करने के लिए, परमेश्वर के आत्मा के द्वारा शरीर के कामों को मार डालना हमें यकीन है कि यह परमेश्वर की आत्मा में संचालित होगा। परमेश्वर का आत्मा हमें बताता है आप परमेश्वर के बच्चे हैं परमेश्वर आपके साथ हैं। तब हम लहू के द्वारा छुटकारे को स्प्राप्ता वह शुरुआत है, परमेश्वर के बच्चे, यीशु, जो आज पिता के दाहिने विराजमान है और जिसने हमारे लिए सब कुछ प्राप्त किया है, पूर्ण और सिद्ध है। जब वह आया, तो वह परमेश्वर की परिपूर्णता के साथ आया। उसके शरीर में सारी पूर्णता थी। तब हमारे पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार हो सकता है कि हम अपने लिए परमेश्वर के पुत्रों को ढालें। वह दिन भर पिता के दाहिने हाथ पर बैठा रहता है और फिर हमें बताता है मैं अपनी आत्मा तुम्हारे पास भेजता हूं। आपको इस भावना में परिपूर्ण बनाने के लिए मेरे पास जो कुछ है उसमें से मैं सब कुछ लूंगा। जब तक आप इस धरती पर हैं, तब तक आपको इस महान अनुभव तक पहुँचाने के लिए मैंने आपको अपनी आत्मा दी है। पवित्र आत्मा या परमेश्वर की आत्मा हमसे पूछ रही है, हमें जगा रही है रोमियों अध्याय आठ, पद 32, कहता है: **जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?**

परमेश्वर देदेगा !!! आपकी क्या जरूरतें हैं? मैं यह नहीं कह रहा हूं कि यह दुनिया के बारे में , इसके बारे में सोचने की भी जरूरत नहीं है क्योंकि हम अभी स्वर्ग की यात्रा पर हैं। मैं आपको वह सब कुछ दूंगा जो आपको इसके लिए चाहिए। दोस्तों पर शायरी Israel पहले कोई मन्ना नहीं मांगा था। मिस्र छोड़ने से पहले ही स्वर्ग में चीज़ें व्यवस्थित हो चुकी थीं। मेरे लोग आते हैं और उनके लिए मन्ना तैयार करते हैं। हमारे पास यह तैयार है। लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए, और उस विश्वास को हमारे लिए काम करने के लिए, यह निश्चित है कि हम पाप की पकड़ से बचाए गए हैं। परमेश्वर हमें पूर्ण बनाने के लिए पर्याप्त रूप से विश्वासयोग्य है, और वह ऐसा करने में सक्षम है। हमें इस पर विश्वास करना चाहिए। रोमियों अध्याय आठ, पद बत्तीस **जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा? परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उन को धर्मी ठहराने वाला है। फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया वरन मुर्दों में से जी भी उठा,** केवल मृत्यु ही नहीं, हम जानते हैं, परन्तु मृत्यु के द्वारा क्षमा है। उसी मौत से उनके शरीर का पर्दा फट गया था। परन्तु वह वहाँ खड़ा नहीं रहता, वह वही है जो मर गया और फिर जी उठा। फिर अगला स्तर है। केवल वहाँ ही नहीं बल्कि परमेश्वर के पुत्र के रोमियों की पत्री अध्याय आठ, पद चौंतीस **और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।** क्यों? हमें परिपूर्ण करने के लिए। महिमामंडित महायाजक यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं। तुम वहाँ क्यों बैठे हो? हमें पूरी तरह से बचाने के लिए। प्रभु वहाँ हैं हमारी मदद करने के लिए। प्रभु वहाँ बैठे हैं यह हमारे सब शत्रुओं पर जो हमारे विरुद्ध खड़े हैं, उनके ऊपर उसका पाँव की चौकी बनाना है पिता के दाहिनी ओर बैठे। पिता कहते हैं, "मेरे दाहिने हाथ बैठ, कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी बना दूं। वे हमारे शत्रु हैं, और वे हमारे विरुद्ध हैं, यह वह शक्ति है जो हमारे आध्यात्मिक विकास, हमारे आध्यात्मिक विकास का विरोध करती है। हमारा अज्ञान एक शक्ति है, इसे अज्ञान कहा जाता है अज्ञान [ignorance] यह भ्रम कि हमारी अंधी आंखें संसार की हैं, दुनिया का धोखा जो हमारा शरीर है। इस तरह कई ताकतें हमारे खिलाफ खड़ी हैं। परन्तु पिता पुत्र से कहता है, मेरे दाहिने बैठो, क्यों? इन जीवनों का विरोध करने वाले शत्रुओं को हमारे पैर का नीचे लाने के लिए, जिन्हें उसने परमेश्वर का पुत्र होने के लिए चुना है, मेरे दाहिने हाथ पर बैठो उन्हें पूर्ण बनाने के लिए, उन्हें अनंत काल के पूर्ण अधिकार में लाने के लिए। प्रभु यीशु हमसे कहते हैं, , मैं तुम्हारे आगे इस पवित्र मन्दिर में जाता हूँ, जहाँ तुम्हें आना है, और मैं पिता के दाहिने विराजमान हूँ।" और फिर तुम को बुलाते हो, , आपको पोस्ट करने के लिए अनुमति की आवश्यकता नहीं है मैंने परदा फाड़ कर खोला। आइए हम रक्त के भरोसे से पवित्र मंदिर में साहस के साथ आएं। आइए हम पवित्र मंदिर में जाएं,

जहां पिता और पुत्र बैठते हैं, और पवित्र मंदिर में, जिसमें कोटि कोटि स्वर्गदूत रहते हैं। आप उस उपस्थिति में बैठकर इसे प्रकट करने जा रहे हैं। पिता आज इकलौता पुत्र नहीं है, हमारे महायाजक वह जो हमारे लिए सब कुछ अच्छा करता है, वह भी प्रभु के साथ है जो हमें पूर्ण बनाने के लिए पर्याप्त है। जब हम उस उपस्थिति में होते हैं, तो हमारी आंतरिक आंख खुल जाती है जब हम उस उपस्थिति में होते हैं, तो परमेश्वर का वचन हमारे सामने प्रकट होता है। जब हम उस उपस्थिति में होते हैं, तो वही उपस्थिति हमें शुद्ध करती है, हमें पवित्र कर रहा है। याजक मेरे साम्हने मन्दिर के पात्र को पवित्र करेंगे यह इतना सरल है। यह परमेश्वर के बच्चों का सच्चा मंदिर है। यह पत्थर या मिट्टी से नहीं बना है, यह इस काम में शामिल नहीं है यह मत भूलो कि यह अदृश्य है और यह स्वर्गीय है। वहीं से हमें प्रवेश मिला। तो हम इस बारे में क्या कहें? रोमियो की पत्री अध्याय आठ इकतीस पद में विश्व शक्तियाँ हमारे प्रति शत्रु हैं। परन्तु यदि परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, परमेश्वर पिता, पुत्र, परमेश्वर हमारे साथ हों, तो हमारे विरुद्ध कौन है? चलो हमारे सारे बहाने लेते हैं और उन्हें बाहर फेंक देते हैं। जिसने हमारे लिए सब कुछ अच्छा किया है, जिसने हमें छुड़ाया, जिसने हमें पाप से बचाया, वह हमें उस महिमा की पूर्णता तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त है। पिता के दाहिनी ओर हमारे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे आपको खुद को सबमिट करना होगा और दौड़ना होगा ताकि आप इसे प्राप्त कर सकें जब आप पवित्र के चरणों की चौकी पर जाते हैं तो आप इस कार्य की महिमा का अनुभव करने जाते हैं, जो आपको असंभव लगता है वह संभव होने जा रहा है। कोईमानव हाथ नहीं है, तुम्हारी बुद्धि नहीं, यह आपका प्रयास नहीं है, यह आपकी गणना नहीं है अदृश्य क्षेत्र अदृश्य हाथ कुछ अदृश्य कर रहे हैं। यह क्या है? महान अदृश्य क्षेत्र, , अपनी वासनाओं के साथ शरीर को सूली पर चढ़ना, आपको परिपूर्ण करने के लिए इस दुनिया को जीतने की शक्ति प्राप्त करने के लिए। एक अदृश्य क्रिया हो रही है। यही हमें परिपूर्ण बनाता है। गौरव की यात्रा। इब्रानियों के दूसरे अध्याय के दसवें पद में **क्योंकि जिस के लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।** क्या यह सुंदर नजारा नहीं है? रोमियो की पत्री अध्याय आठ पैंतीस वाक्य **कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?** कोई बल नहीं कर सकता, परमेश्वर के बच्चे। **क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? जैसा लिखा है, कि तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होने वाली भेंडों की नाईं गिने गए हैं। परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम**

से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥ आइए इसे पाने के लिए दौड़ें। क्या आप इस आध्यात्मिक क्षेत्र की खोज कर सकते हैं। यह खुला है। लेकिन अदृश्य है। इसे प्राप्त करना और लेना चाहिए परिपूर्ण होना चाहिए। हमारे बहाने मत बनाओ। बुरे सिद्धांत, झूठे सिद्धांत, और धोखे की आत्मा के शिकार न हों। जहाँ तक हो सके दौड़ो।हमारी कॉलिंग **high** है, स्वर्गीय है इसे पाने के लिए दौड़ो। परमेशवर हमारे साथ है, उसने हमें अपनी आत्मा दी है। किसी भी कमजोरी में हमारा साथ होता है, परिचारिका हमारे साथ है। हमारे जीवन को आत्मा के हाथों में दे दो। वह करतूत से हमारा पालन-पोषण करेगा। हमें संपूर्ण बनाएंगे। हमें महिमा की ओर ले जाएगा, उस महान आशा की ओर। आइए हम उस सत्य की आत्मा के भण्डारी के साथ एक अविभाज्य संबंध में आएं। प्रभु को व्यक्तिगत रूप से जानने के लिए, आइए हम स्वयं को नम्र करें और आत्मा के नेतृत्व में चलने के लिए समर्पण करें।हर जीवन जो पहले से ही अंदर बैठा है वह कीमती है। यीशु मसीह, हमारा जीवित पत्थर, आधारशिला है। तथाकथित प्रेरितों का एक समूह, जो समय-समय पर परमेशवर से डरने वाले होते हैं, जैसा कि हम इसके साथ करते हैं। परमेश्वर अभी भी उनके साथ निर्माण करने के लिए पत्थरों की खोज कर रहा है। विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का अर्थ पवित्र पत्थर बनना है, न कि अपनी इच्छानुसार जीवन जीने के लिए। यह एक जीवित पत्थर बन जाना चाहिए। (1Kings6:7) **और बनते समय भवन ऐसे पत्थरों का बनाया गया, जो वहां ले आने से पहिले गढ़कर ठीक किए गए थे, और भवन के बनते समय हथौड़े वसूली वा और किसी प्रकार के लोहे के औजार का शब्द कभी सुनाईं नहीं पड़ा ।**परमेशवरका सुंदर मंदिर, परमेश्वर के तम्बू को, जिसमें निवास करना है, सुंदर पत्थर बनाना, हम खुद को परमेशवर के सामने विनम्र कर सकते हैं ताकि एक साथ बनने के लिए एक पत्थर बन सकें परमेशवर को समर्पित किया जा सकता है। आइए हम इस आध्यात्मिक ग्रह को बनाए रखें। परमेशवर ने हमें स्वर्ग दिया है। भले ही वह मिट्टी हो और अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंची हो 1 कुरिन्थियों अध्याय 3 पद सोलह **क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?** पहला, कुरिन्थियों अध्याय 6, पद 19 . में **क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है; कि वह ज्ञानियों को उन की चतुराई में फंसा देता है।**हम परमेशवर की महिमा करने के लिए खरीदे गए हैं। इसके लिए कम और यह इसके लायक है। एक महायाजक के रूप में सेवा करने के लिए तैयार करें। आध्यात्मिक बलिदान करने के लिए, जैसा कि रोमियों अध्याय 12 . के पहले पद में कहा गया है एक जीवन, पवित्रता और भेंट चढ़ाने के लिए तैयार हो जाओ जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है। एक अच्छे महायाजक के रूप में, इस शरीर को संरक्षित करने के लिए, इसमें कुछ भी अन्यायपूर्ण प्रवेश न करें और इस तथ्य को गंभीरता से लें कि यह पूरी तरह

से एक मंदिर है। परमेशवर प्रसन्न होंगे। अनंत काल से पहले देखें। इब्रानियों अध्याय 12 का उल्लेख पहले पद में किया गया है **वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।** इधर उधर मत देखो। लक्ष्य के लिए आगे बढ़ें। receive from the Lord: क्योंकि परमेशवर हमारे साथ है। रोमियों के इकतीसवें अध्याय के आठवें पद में **यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?** हमें देख बैठा है। अपनी हर हरकत पर नजर रख रहे हैं। यदि परमेश्वर का आत्मा आज आपके हृदय में बोलता है, तो परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। परमेश्वर आपको उसकी पूरी क्षमता तक पहुंचाना चाहता है। परमेशवर का हाथ तुम्हारे साथ है। हार न मानना और हार न मानना सिखाएं। सबमिट करें परमेश्वर परमेशवर हमें इन वचनों से आशीष दे। **आमेन**

For Technical Assistance
Amen TV Network
Trivandrum,Kerala
MOb : 999 59 75 980
755 99 75 980
Youtube : amentvnetwork

Contact
Pastor.Benny
Thodupuzha
MOb: 9447 82 83 83

-**OK-**